

अपेक्षा की जाती है।

- इस अपेक्षा भूमिका को सुविधाजनक बनाने के लिये विश्वविद्यालयों को हमेशा अकादमिक उत्कृष्टता और प्रशासनिक अनुभव के अलावा मूल्यों, व्यक्तित्व की विशेषताओं और अखंडता वाले व्यक्तियों की तलाश रहती है।
- राधाकृष्णन आयोग (1948), कोठारी आयोग (1964-66), ज्ञानम समिति (1990) और रामलाल पारख समिति (1993) की रिपोर्टों में समय-समय पर होने वाले बहुप्रतीक्षित परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता को बनाए रखने में कुलपति की भूमिका के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है।
- वह न्यायालय, कार्यकारी परिषद, अकादमिक परिषद, वित्त समिति और चयन समितियों का पदेन अध्यक्ष होगा और कुलाधिपति की अनुपस्थिति में डिग्री प्रदान करने के लिये विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करेगा।
- यह देखना कुलपति का कर्तव्य होगा कि अधिनियम, विधियों, अध्यादेशों और विनियमों के प्रावधानों का पूरी तरह से पालन किया जाए तथा उसे इस कर्तव्य के निर्वहन के लिये आवश्यक शक्ति प्राप्त होनी चाहिये।

कुलपति की नयुक्ति को लेकर कई भारतीय राज्यों के सीएम और राज्यपालों के बीच मतभेद:

- हाल ही में तमिलनाडु विधानसभा ने दो विधायक पारित किये, जो 13 राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों (VC) की नयुक्ति में राज्यपाल की शक्ति को स्थानांतरित करने का प्रावधान करते हैं।
- राज्यपाल की जगह मुख्यमंत्री को सभी राज्य-संचालित विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति बनाने की मांग करने वाला पश्चिम बंगाल का एक विधायक वर्ष 2022 में विधानसभा द्वारा पारित किया गया था (अभी भी राज्यपाल की सहमति के लिये लंबित है)।
- महाराष्ट्र, कर्नाटक, झारखंड और राजस्थान राज्यों के कानून राज्य एवं राज्यपाल के बीच सहमति की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

आगे की राह

- समय आ गया है कि सभी राज्य राज्यपाल को सचिव के रूप में रखने पर पुनर्विचार करें।
- हालाँकि उन्हें विश्वविद्यालय की स्वायत्तता की रक्षा के वैकल्पिक साधन भी खोजने चाहिये ताकि सत्ताधारी दल विश्वविद्यालयों के कामकाज पर अनुचित प्रभाव न डालें।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारत के किसी राज्य की विधानसभा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2019)

1. वर्ष के प्रथम सत्र के प्रारंभ में राज्यपाल सदन के सदस्यों के लिये रूढ़िगत संबोधन करता है।
2. जब किसी विधियुक्त विषय पर राज्य विधानमंडल के पास कोई नियम नहीं होता, तो उस विषय पर वह लोकसभा के नियम का पालन करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 176(1) में यह व्यवस्था है कि राज्यपाल प्रत्येक वर्ष के पहले सत्र के प्रारंभ में एक साथ एकत्रित हुए दोनों सदन को संबोधित करेगा और विधानमंडल को सूचित करेगा एवं विधायिका को उसके सम्मन के कारणों के बारे में सूचित करेगा। अतः कथन 1 सही है।
- अनुच्छेद 208 राज्य विधानमंडलों में प्रक्रिया के नियमों से संबंधित है। इसमें कहा गया है कि:
- किसी राज्य के विधानमंडल का कोई सदन इस संविधान के प्रावधानों, इसकी प्रक्रिया और अपने कार्य के संचालन के अधीन विनियमन के लिये नियम बना सकता है।
- जब तक खंड (1) के तहत नियम नहीं बनाए जाते, तब तक प्रक्रिया के नियम और स्थायी आदेश इस संविधान के प्रारंभ से ठीक पहले संबंधित प्रांत के विधानमंडल के संबंध में लागू होते हैं, ऐसे संशोधनों के अधीन राज्य के विधानमंडल के संबंध में प्रभावी होंगे और जैसा कि विधानसभा के अध्यक्ष या विधानपरिषद के अध्यक्ष, जैसा भी मामला हो, द्वारा किया जा सकता है।
- इसलिये जब औपनिवेशिक काल से राज्य विधानमंडल में किसी विशेष विषय पर कोई नियम नहीं होता है, तो राज्य विधानसभाएँ लोकसभा के नियमों का पालन करती हैं। अतः कथन 2 सही है।

अतः विकल्प (c) सही है।

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2018)

1. कसलसी राजुत के राजुतडल के वरुदुध उसकी डदलवधुके दुरलरन कसलसी नुतलडललड डें कुई आडरलधकु कलरुतवलही संसुथलडतल नही की डलरुगी ।
2. कसलसी राजुत के राजुतडल की डरललडधुतलरुतुं और डतुते उसकी डदलवधुके दुरलरन कड नही कतु डलरुगे ।

उडरुतुत कथनुं डें से कुन-सल/से सही है/है?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दुनुं
- (d) न तु 1 और न ही 2

उतुतर: (c)

वुतलखुतल:

- डलरुतुत संवधलन कल अनुकुषुदे 361 डलरुत के रलषुदुरडतु और राजुतुं के राजुतडलल डु कुषु डुरतरलकुषु डुरदलन कुरतल है:
- रलषुदुरडतु तल कसलसी राजुत के राजुतडलल के वरुदुध उसकी डदलवधुके दुरलरन कसलसी नुतलडललड डें कुई आडरलधकु कलरुतवलही डलरु नही रखुी डलरुगी । अतु: कथन 1 सही है ।
- रलषुदुरडतु तल कसलसी राजुत के राजुतडलल की गरलडुतलरुतु तल कलरलवलस की कुई डुरकुरतुतल उसकी डदलवधुके दुरलरन कसलसी नुतलडललड से डलरु नही की डलरुगी ।
- रलषुदुरडतु तल राजुतडलल के वरुदुध उसकी डदलवधुके दुरलरन कसलसी नुतलडललड डें उसके दुवलरल वुतकुतुगलत हैसतुत से कतु डलरु कसलसी कुतुतु के संडुंध डें कुई सवलल कलरुतवलही संसुथलडतल नही की डलरुगी । हललुकुदु डहीने कल नुतसल देने के डलद कलरुतलडल डें डुरवेश कुरने से डहले तल डलद डें कतु डलरु अडने वुतकुतुगलत कुतुतुं के संडुंध डें कलरुतुकल के दुरलरन उसके खललडुदुवलनी कलरुतवलही शुडू की डल सकुतुी है ।
- अनुकुषुदे 158 कहतल है कल राजुतडलल की डरललडधुतलरुतुं और डतुतुं कु उसके कलरुतुकल के दुरलरन कड नही कतु डलरुगी । अतु: कथन 2 सही है ।
- अतु: वकुलड (c) सही है ।

??????

डुरशुन. कतु उकुतुतड नुतलडललड कल नरुणतु (डुललई 2018) दललुी के उडरलडुतलडल और नरुवलकतुल सरकलर के डुीक रलडनेतकु कशडकश कु नडलडल सकुतल है? डरुीकुषण कीडतु। (2018)

डुरशुन. राजुतडलल दुवलरल वधुतलरुतुं के डुरडुग की आवशुतुक शरुतुं कल ववलकन कीडतु। वधुतलरुतु के सडकुष रखे डनल राजुतडलल दुवलरल अधुतलदुशुं के डुन: डुरखुतलडन की वैधतल की ववलकनल कीडतु। (2022)

सुरुतु: द हदु